Dhirendra Kr. Singh
Guest Faculty
Deptt. of History
R.N. College, Hajipur

Class- XI

सामन्तवाद का पतन

सामन्तवाद मध्यकालीन विश्व की सबसे महत्वपूर्ण संस्था थी। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में जब विश्व आधुनिकता की ओर करवट ले रहा था तब कई मध्यकालीन संस्थाएं पतन के गर्त में चली गई, सामन्तवाद भी इनमें से एक था। इसके पतन में कई कारणों का योग रहा है जो द्रष्टव्य है।

(1) सामन्तों का पारस्परिक संघर्ष — सामन्त प्रथा की एक बड़ी कमजोरी यह थी कि सामन्त बराबर आपस में लड़ते रहते थे। दो सौ वर्षों के धर्मयुद्ध में बहुत सारे सामन्त मारे गए थे। इसके बाद इंगलैंड एवं फ्रांस के सामन्तों के बीच लड़ाई छिड़ गई जो सौ वर्षों तक चली। इनमें इनके धन एवं जन दोनों की हानि हुयी। 15वीं सदी में इंगलैंड के सामन्तों के बीच राजा पर प्रभाव स्थापित करने के लिये गुलाबों का युद्ध लड़ा गया। इस अनवरत युद्धों से सामान्य जनों में सामन्तों के प्रति घृणा की भावना पैदा हुई। दूसरी ओर राजाओं को

Scanned with CamScanner

हस्तक्षेप का मौका दिया। अगर इंग्लैंड में यार्क और लंकास्टर वंश के सामन्त आपस में नहीं लड़ते तो वहाँ ट्यूडर निरंकुश तंत्र का उदय नहीं होता।

(2) नये हथियारों का आविष्कार - नये शस्त्रास्त्रों के प्रचलन, सामरिक पद्धति में परिवर्तन विशेषतः बन्दूक का एवं बारूद के बढ़ते प्रयोग के कारण भी सामन्तवाद का शीघ्रता से पतन हुआ। अभी तक सामन्तों के किलों पर तीर की मार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, परन्तु अब बन्दूकों एवं तोपों की मार से किलों की दीवारें सामन्तों की रक्षा करने में असमर्थ हो गई। राजा इन नये हथियारों द्वारा सामन्तों के किलों पर आसानी से कब्जा कर लेते थे।

(3) कृषि उत्पादन में वृद्धि - इसी समय कृषि तकनीक में परिवर्तन से कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई। इसमें तीन खेत प्रणाली, नवीन सिंचाई प्रणाली का काफी योग था। तीन खेत प्रणाली में दो कृषि योग्य भूमि को तीन भागों में बाँटकर पहले वर्ष में बारी बारी से दो खण्डों पर कृषि की जाती थी तथा एक भाग को खाली छोड़ दिया जाता था। जिस पर अगले वर्ष खेती की जाती थी। कृषि उत्पादन में वृद्धि से अधिक लोगों का भरण पोषण सम्भव हुआ। परिणामस्वरूप 1000 ई से 1300 ई के मध्य यूरोप की जनसंख्या लगभग दोगुनी हो गई। शहरों के विकास और जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि हुई। शहरों के विकास से निर्मित वस्तुओं के उत्पादन में तथा आर्थिक विशिष्टीकरण में वृद्धि हुई। अब कृषक की सामन्त पर निर्भरता कम हो गई जिससे सामन्तवादी प्रणाली का पतन शुरू हुआ।

(4) किसानों का विद्रोह - सामंत प्रथा किसानों के शोषण पर आधारित थी। सामन्ती उत्पीड़न से क्षुब्ध होकर किसानों ने सामन्त प्रथा का विरोध किया। इसी समय 1348 ई में यूरोप में भीषण महामारी जिसे काली मृत्यु कहा जाता

है, व्यापक पैमाने पर फैली जिससे यूरोप के लगभग आधी जनसंख्या को समाप्त हो गया। इससे खेतों में काम करने वाले किसानों एवं मजदूरों की भारी कमी हो गई। मजदूरों ने उचित पारिश्रमिक की माँग की। इंग्लैंड में वाट टाइलर के नेतृत्व में (किसान विद्रोह) हुए तथा फ्रांस में जैकरी वर्ग का विद्रोह को स्थानीय सरकारों ने सामन्तों के दबाव में आकर दबा दिया परन्तु इससे मजदूरों एवं किसानों में काफी जागृति आयी। इसमें यह वर्ग खेती बाड़ी को त्यागकर शहरों की ओर रुख किया जिससे उनके श्रम पर आधारित ग्रामीण व्यवस्था (सामन्तवाद) छिन्न भिन्न हो गई।

(5) धर्मयुद्ध का प्रभाव - सामन्तवाद के पतन के लिए धर्मयुद्ध (1095-1291 ई.) भी जिम्मेदार थे। धर्मयुद्धों में भाग लेने वाले बहुत से सामन्तों ने या तो अपनी जमीनें बेच दी थीं या उसे गिरवी रख दिया था। इस तरह सामन्तों शक्ति तथा प्रभाव राजाओं तथा व्यापारियों के हाथ में चले गये। अनेक सामन्त इन युद्धों में मारे गये और उनकी भूमि राजाओं द्वारा जब्त कर ली गई।

⊙ मुसलमानों से भूमध्य सागर को मार्ग छिनकर प्राचीन काल की तरह पूरब-पश्चिम के बीच व्यापार मार्ग विकसित हुए

(6) व्यापारिक वर्ग का अभ्युदय - कृषि उत्पादन में अधिशेष एवं शिल्पों के विशिष्टीकरण ने शहरों एवं व्यापार की प्रगति में काफी सहायता की। धर्मयुद्ध ने भी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा भी काफी दिया। इस सबसे एक संगठित व्यापारिक वर्ग उदय हुआ, जो सामन्तवाद का जबरदस्त विरोधी था। व्यापारियों ने सामन्तवाद का दो कारणों से विरोध किया-

(क) सामन्ती व्यवस्था में उन्हें कई चुंगी चौकियों पर अनावश्यक कर देना होता था

(ख) कृषि दास प्रथा के कारण मजदूरों का नहीं मिलना

अतएव व्यापारिक वर्ग हमेशा इस ताक में रहते थे कि कब सामन्ती व्यवस्था का पतन हो। उन्होंने इसी कारण राजा को काफी आर्थिक मदद की और राजा इनके मदद से स्थायी सेना का गठन किया जो साम्राज्य निर्माण में सहायक

Scanned with CamScanner

सिद्ध हुई। ऐसे वातावरण में राजा के लिए व्यापारियों का हित पोषण करना लाजिमी हो गया जो सामन्तों के हित के विपरीत था।

(7) राजा की शक्ति में वृद्धि - स्थायी सेना तथा नवीन हथियारों के प्रयोग में आ जाने से राजा की शक्ति में वृद्धि हुई। विभिन्न वर्गों के सहयोग ने भी राजा की शक्ति बढ़ायी। मुद्रा के प्रचलन ने राजा को अपने अधिकार कायम करने में एक और सहूलियत प्रदान की। वह प्रत्यक्ष रूप से अपने राज्य में कर लगाने लगा। राजा ने एक स्वतंत्र नौकरशाही का सृजन करके भी प्रशासनिक क्षेत्र में सामन्तों के प्रभाव से मुक्ति पायी। इन विभिन्न कारणों ने राजा की शक्ति को निरंकुश बनाने एवं सामन्तों को दबाने में भूमिका अदा की।

इस तरह हम देखते हैं कि सामन्तवाद अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं एवं तत्कालीन प्रगतिशील नवीन तत्वों का शिकार हुआ।

पृष्ठ - 4

— ० —

मो. - 7061883161

Scanned with CamScanner